भारतीय पारंपरिक ज्ञान पत्रिका
खंड 25(8), अगस्त 2026, पृ. 753-767
DOI: 10.56042/ijtk.v25i8.28109

उत्तराखंड के घुरदौरी क्षेत्र के सीमांत गांवों में प्रचलित पारंपरिक व्यंजनों का नृजाति-वनस्पति अध्ययन

मानवी रावत[क] एवं ममता बौंठियाल[ख,*]

[क,ख]जैव प्रौद्योगिकी विभाग, जी.बी. पंत इंजीनियरिंग कॉलेज, घुरदौड़ी, पौड़ीगढ़वाल 246194, उत्तराखंड, भारत

[*]ई-मेल: mamtabaunthiyal@yahoo.co.in

प्राप्त 21 मार्च 2026; संशोधित 09 अगस्त 2026; स्वीकृत 14 अगस्त 2026

उत्तराखंड के घुरदौरी क्षेत्र के परिधीय गाँवों में पाए जाने वाले जंगली एवं स्थानीय रूप से एकत्रित खाद्य पौधे एक ऐसी परंपरा का हिस्सा हैं, जिस पर अभी तक पर्याप्त शोध नहीं किया गया है। ये पौधे क्षेत्र में मौसमीया संकट-सम्बंधी बाजार व्यवधानों के दौरान खाद्य सुरक्षा बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अध्ययन में इन पौधों की प्रजातियों तथा उनसे संबंधित पारंपरिक व्यंजनों का दस्तावेजीकरण किया गया। साथ ही, उद्धरण आवृत्ति (FC) और उद्धरण की सापेक्ष आवृत्ति (RFC) के आधार पर इन के सांस्कृतिक महत्व का आकलन किया गया तथा पौधों के जीवन-रूप और मौसमी उपलब्धता के उनके उद्धरण पर पड़ने वाले प्रभाव निर्धारित किए गए। अध्ययन के लिए दस गाँवों के 36 सूचनादाताओं से प्रत्यक्ष साक्षात्कार, सहभागी अवलोकन और प्रश्नावली के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया। कुल 27 वनस्पति कुलों से संबंधित 45 पौध प्रजातियाँ दर्ज की गईं। इन प्रजातियों का RFC मान 0.19 से 0.97 के बीच पाया गया, जो इनके सांस्कृतिक महत्व में उच्च स्तर की विविधता को दर्शाता है। शाकीय (herbaceous) पौधे सर्वाधिक सामान्य थे, जिनके बाद वृक्ष, झाड़ियाँ और आरोही/लताएँ पाई गईं। ऐसी पौध प्रजातियाँ, जो संबंधित मौसम में आसानी से उपलब्ध और प्रचुर मात्रा में होती हैं, स्थानीय समुदाय द्वारा अधिक उपयोग की जाती थीं। पौधों के पत्ते और बीज सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले भाग थे, जिनका उपयोग उनके पोषण मूल्य तथा विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों में उपयोगिता के कारण किया जाता था। दस्तावेजीकृत पौध प्रजातियों का उपयोग विभिन्न पारंपरिक खाद्य तैयारियों जैसे साग, सब्जी, चटनी, मिठाई, पेय पदार्थ और अचार में किया जाता था, जो दैनिक तथा मौसमी आहार में इनके नियमित उपयोग को दर्शाता है। पौधे के जीवन-रूप और RFC के बीच कोई महत्वपूर्ण सांख्यिकीय संबंध नहीं पाया गया (Spearman ρ = -0.255, R^2 = 0.065, p = 0.626)। इसके विपरीत, मौसमी उपलब्धता और RFC के बीच मध्यमस्तर का सहसंबंध पाया गया (Spearman ρ = -0.673, R^2 = 0.452, p = 0.068)। इससे संकेत मिलता है कि स्पष्ट मौसमी उपलब्धता वाली प्रजातियों का उल्लेख वर्षभर उपलब्ध रहने वाली प्रजातियों की तुलना में अधिक बार किया गया। अध्ययन के परिणाम इस बात पर बल देते हैं कि इन सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण तथा सीमित मौसमी उपलब्धता वाली पौध प्रजातियों से संबंधित पारंपरिक एथ्नोबॉटनिकल ज्ञान का संरक्षण खाद्य सुरक्षा और जैवविविधता संरक्षण दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। साथ ही, हिमालयी क्षेत्र में पारंपरिक ज्ञान के क्षरण एवं संभावित ह्रास को रोकने के लिए इस काव्य वस्थित दस्तावेजीकरण आवश्यक है, ताकि सतत खाद्य प्रणालियों तथा जैवविविधता के संरक्षण को सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्य शब्द: नृजाति वनस्पति विज्ञान, उद्धरण आवृत्ति, स्थानीय ज्ञान, स्थानीय खाद्य पौधे, सापेक्ष उद्धरण आवृत्ति, पारंपरिक खाद्य प्रणाली